स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय , नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत

हिंदी विषय में पीएच. डी. उपाधि हेतु शोध विषय की रुपरेखा

शोध विषय :

‘समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श’

(चयनित समकालीन आदिवासी कवियों के विशेष संदर्भ में)

शोधार्थी

श्री हिरामण देवराम टोंगारे

(एम.ए.,एम् एड.,नेट)

हिंदी विभाग

राजे रामराव महाविद्यालय, जत. जि. सांगली

शोधनिर्देशक

डॉ. अनिलकुमार आर. राठोड

हिंदी विभाग

शहीद भगतसिंग महाविद्यालय, किल्लारी, ता. औसा, जि. लातूर

अनुसंधान केंद्र

हिंदी विभाग

दयानंद आर्ट्स कॉलेज, लातूर

सन- 2019

शोध विषय की रुपरेखा

'समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श'

(चयनित समकालीन आदिवासी कवियों के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना :

21 वीं सदी विमर्शों की सदी है। इस समय कई वंचित समूहों ने अपनी अस्मितागत पहचान हेतु निर्णायक लड़ाई छेडी है। ये लड़ाईयाँ किसी समाज या किसी समूह के विरोध में नहीं है, बल्कि अपने पक्ष में अपने अधिकार के लिए लड़ी जा रही है। इन लड़ाइयों के केंद्र में एक वैचारिक दर्शन कार्य करता है। इन अस्मितागत संघर्षो में आदिवासी संघर्ष एक महत्तम एवं विशिष्ट विमर्श के रुप में अस्तित्व में आया है। आदिवासी विमर्श अपनी आंतरिक संरचना में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरण संबंधी प्रश्नों को अभिव्यक्त करता है। आदिवासियों का सवाल दुनिया भर में चल रहे अस्मितामूलक सवालों में सबसे जरुरी, सबसे खास और सबसे ज्यादा मानवीय है।

औपनिवेशिक काल में जब अंग्रेजों द्वारा अपने व्यापारिक और साम्राज्यवादी हितों के कारण भारत में जल, जंगल और जमीन का दौहन शुरु हुआ, तो वह आदिवासी जीवन पर सीधा हमला था। क्योंकि यह उनके लिए प्राकृतिक संसाधन ही नहीं पूरा जीवन ही था। ऐसे जीवन पर हमला आदिवासियों के अस्तित्व पर संकट के रुप में आया। जिसकी प्रतिक्रिया में आदिवासियों ने प्रतिरोध प्रारंभ किया। उनका प्रतिरोध 'चिपको' आंदोलन और बिरसा मुंडा का 'उलगुलान' आंदोलन प्रमुख है। आजाद भारत की विकास की योजनाओं में भी आदिवासियों के लिए उतनी जगह नहीं थी जिसके वे हकदार थे। वे विकास की तथाकथित योजनाओं से बेदखल कर दिए गये, या फिर विकास की किमत अदा कर राष्ट्र–राज्य की लोककल्याणकारी अवधारणा के शिकार हो गए। आज भूमंडलीकरण, उदारवादी लोकतंत्र एवं मुक्त बाजार व्यवस्था में आदिवासियों के शोषण की तीव्रता बढ़ चुकी है। ऐसे में आदिवासी विमर्श, आदिवासियों की पहचान, अस्मिता और अधिकारों का एक लोकतांत्रिक, तार्किक और मानवीय अधिकार प्राप्ति की कोशिश है। जो मिथकों, सांस्कृतिक धाराओं, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा साहित्यिक क्षेत्रों में आदिवासी प्रश्नों और संदर्भ से जुड़े हुए स्वरों की पहचान और खोज करता

है। आदिवासी साहित्य की विधाओं में कविता आदिवासी साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण विधा रही है। ज्यादातर आदिवासी साहित्य गीत या कविता के माध्यम से हमारे सामने आया है। आदिवासी कवियों में निर्मला पुतुल, वाहरु सोनवणे, हरिराम मिणा, महादेव टोप्पो, डॉ. मंजु ज्योत्सना, सरिता बडाईक, डॉ. रामदयाल मुंडा, वंदना टेटे आदि का नाम विशेष रुप से लिया जाता है। इन सभी कवियों की कविताओं में भोगा हुआ सत्य और समाज की सामाजिक वैयक्तिक जीवन संघर्ष, नारी की समस्याएं, विस्थापन, अस्तित्व की समस्या और शिक्षा जैसी समस्याएं प्रमुख रुप से दृष्टिगोचर होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिंदी के आदिवासी कवियों का आदिवासी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाएगा।

विषय चयन की प्रेरणा :

एक आदिवासी परिवार में पैदा होने के कारण आदिवासी जनजीवन को काफी नजदीकी से देखा है। आदिवासी होने के दुःख- दर्द को अनुभूत किया है। आदिवासी समाज के जल, जमीन एवं जंगल की लड़ाई एवं इन प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा हेतु उनके विभिन्न आंदोलनों के संदर्भ में परिचित था। महाविद्यालयीन एवं विश्वविद्यालयीन पढाई करते समय हिंदी एवं मराठी साहित्य की आदिवासी समाज पर केंद्रित कई रचनाएं पढ़ने में आयी। ज्यादातर रचनाएं गैर आदिवासी लेखको द्वारा लिखी गयी थी। इन रचनाओं को पढ़ते समय मुझे लेखक की अनुभूति की प्रमाणिकता को लेकर संदेह हुआ। क्योंकि गैर आदिवासी व्यक्ति भला कैसे आदिवासी जनजीवन को स्वानुभूति के आधारपर प्रकट कर सकता है ? इस प्रकार का सवाल मेरे मन में आया तत्पश्चात मैंने आदिवासी व्यक्ति द्वारा आदिवासी समाज पर लिखी गयी रचनाओं की छानबीन की। आदिवासी लेखकों की रचनाओं में आदिवासी जनजीवन, लोकसंस्कृति का चित्रण स्वानुभूति के आधारपर हुआ है। मैं इसी निष्कर्ष पर आ गया।

सहानुभूति और स्वानुभूति के इस द्वंद्व ने मुझे 'समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श' इस विषय पर काम करने की प्रेरणा दी। तद्उपरांत इस विषय के संदर्भ में मेरे मार्गदर्शक गुरुवर्य डॉ. अनिलकुमार राठोड सर जी से विचार-विनिमय किया। उन्होंने विषय की गहराई से परिचित कराते हुए प्रस्तुत विषय पर काम करने हेतु प्रेरित किया है। प्रस्तुत विषय की प्रेरणा में जीवन की अनुभूति एवं गुरुवर्य डॉ. अनिलकुमार राठोड सर जी है।

पूर्ववर्ती अनुसंधान कार्य :

मेरी अपनी जानकारी के अनुसार समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं पर किसी भी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है।

अनुसंधान के उद्देश्य :

1. आदिवासी कविता में चित्रित सामाजिक पक्ष का अध्ययन करना।
2. आदिवासी लोकजीवन का अध्ययन करना।
3. आदिवासी संस्कृति का अध्ययन करना।
4. आदिवासी कविता में चित्रित राजनीतिक पक्ष का अध्ययन करना।
5. आदिवासी कवियों का अध्ययन करना।
6. आदिवासी कवियों की भाषा का अध्ययन करना।

अनुसंधान की आवश्यकता :

समकालीन साहित्य में आदिवासी, स्त्री, दलित और अल्पसंख्याक समाज की स्थिति का पुनर्विचार होने लगा है। संविधानिक प्रावधानों के कारण इन वंचित वर्गों के लोगों में अपने शोषण के खिलाफ बड़े स्तर पर संघर्ष करने की चेतना विकसित हुई। जिसे आज विमर्श कहा जाता है। हिंदी साहित्य भी इस बदलते हुए परिवेश से अछूता नहीं है, स्त्री, दलित और आदिवासी लेखन इसका प्रमाण है। आदिवासी लेखन हिंदी के अस्मितावादी विमर्शों में सबसे नवीन है। लेकिन आज हर विधा में आदिवासियों की शोषणपूर्ण स्थिति का चित्रण किया जा रहा है। भारतीय साहित्य में आदिवासी की छवि को प्रामाणिक रुप में पेश करने की कोशिश नहीं की गई है। इस दृष्टि से समकालीन कविता में आदिवासियों के बारे में जो भी बाते सामने आती है उस पर विमर्श करके अनुसंधान को नयी दृष्टि प्रस्तुत करने की आवश्यकता महसूस होती है।

आज परिवर्तन का युग है आदिवासी स्त्री भी आज चार दीवारें तोड़कर पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है यह बदलाव महिला कवयित्रियों की कविताओं में दिखाई

देता है। एक वातावरण होते हुए भी पुरुष और स्त्रियों को अलग अलग समस्याओं का सामना करना पडता है, ज्यादातर महिलाओं को पुरुषों की मानसिकता का संघर्ष करना पडता है जो समकालीन हिंदी कविता में दिखाई देता है। इसीलिए मुझे आदिवासी समाज का विस्थापन, स्त्री वर्ग का संघर्ष, विद्रोह आदि अनेक पहलुओं को उजागर करने की आवश्यकता महसूस होती है।

अनुसंधान की सीमा :

प्रस्तुत अनुसंधान में चयनित हिंदी के आदिवासी कवियों का ही मूल्यांकन किया जाएगा। यह प्रस्तुत अनुसंधान की सीमा है।

अनुसंधान पद्धति :

अनुसंधान में अंत:साक्ष्य और बहि:साक्ष्य दोनों पद्धतियों का उपयोग किया जाएगा। साथ ही प्रस्तुत शोधकार्य में अध्ययन की सुविधा हेतु वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक तथा साक्षात्कार आदि अनुसंधान पद्धतियों का भी प्रयोग किया जाएगा।

शोध विषय की रुपरेखा

‘समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श’

(चयनित समकालीन आदिवासी कवियों के विशेष संदर्भ में)

प्रथम अध्याय : आदिवासी कविता : उद्भव, **विकास एवं आदिवासी विमर्श का सैद्धांतिक पक्ष**

प्रस्तावना

1.1 आदिवासी कविता : उद्भव **एवं विकास**

1.1.1 आदिवासी कविता : उद्भव

1.1.2 आदिवासी कविता : विकास के चरण

1.2 आदिवासी विमर्श का सैद्धांतिक पक्ष :

1.2.1 आदिवासी विमर्श : अर्थ एवं अवधारणा

1.2.2 आदिवासी विमर्श : तत्त्व

1.2.3 आदिवासी विमर्श : व्याप्ति

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : चयनित समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों का परिचयावलोकन

प्रस्तावना

2.1 निर्मला पुतुल

2.2 वंदना टेटे

2.3 महादेव टोप्पो

2.4 वाहरु सोनवणे

2.5 हरिराम मीना

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त **आदिवासी विमर्श**

प्रस्तावना

3.1 समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त सामाजिक विमर्श

3.2 समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त सांस्कृतिक विमर्श

(लोकसंस्कृति, परंपरा, रीतिरिवाज ,मिथक)

3.3 समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त राजनीतिक विमर्श

3.4 समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आर्थिक विमर्श

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं का शिल्पविधान

प्रस्तावना

4.1 शिल्प : अर्थ एवं स्वरूप

4.2 भाषिक तत्व

4.3 शैली तत्त्व

निष्कर्ष

पंचम अध्याय : उपसंहार

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध विषय को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय का शीर्षक है – **'आदिवासी कविता :** उद्‌भव**, विकास एवं आदिवासी विमर्श का सैद्धांतिक पक्ष'** इस अध्याय को दो उपबंधो में विभाजित किया जाएगा, प्रथम उपबंध में '**आदिवासी कविता** उद्‌भव **एवं विकास**' पर प्रकाश डाला जाएगा। इसी के अंतर्गत विकास के चरण तथा आदिवासी कविता के नामाभिधान को रेखांकित करने का प्रयास किया जाएगा। दूसरा उपबंध **'आदिवासी विमर्श का सैद्धांतिक पक्ष'** में आदिवासी विमर्श: अर्थ, स्वरूप, विमर्श के तत्त्व तथा आदिवासी विमर्श की व्याप्ति आदि बातों को विश्लेषित किया जाएगा।

द्‌वितीय अध्याय **'चयनित समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों का परिचयावलोकन'** है। इस अध्याय के अंतर्गत चयनित समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विश्लेषण किया जाएगा | जिसमें निर्मला पुतुल, वंदना टेटे, महादेव टोप्पो, वाहरु सोनवणे, हरिराम मीना, भगवान गव्हाड़े आदि कवि महत्वपूर्ण है। अध्ययन की सुविधा के लिए चयनित कवियों की संख्या कम-ज्यादा हो सकती है।

तृतीय अध्याय **'समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में** अभिव्यक्त **आदिवासी विमर्श'** के नामाभिधान से युक्त है। प्रस्तुत अध्याय चार उपबंधों में विभक्त है, प्रथम उपबंध 'समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त सामाजिक विमर्श' के अंतर्गत आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त सामाजिक विमर्श को ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने का प्रयास किया जाएगा। द्‌वितीय उपबंध 'समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त सांस्कृतिक विमर्श' में आदिवासी

कवियों की कविता में चित्रित आदिवासी समाज की लोकसंस्कृति, परंपरा, तीज त्यौहार, लोकनृत्य, वेशभूषा, जीवनपद्धति आदि पक्षों का विस्तार से विश्लेषण किया जाएगा। तृतीय उपबंध 'समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त राजनीतिक विमर्श' शीर्षक से है जिसमें आदिवासी समाज की राजनीतिक हिस्सेदारी, राजनीतिक व्यवस्था का दुराचार आदि बातों को विमर्श के तत्वों के आधारपर स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तूत अध्याय का चतुर्थ उपबंध 'समकालीन आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त आर्थिक विमर्श' में आदिवासी समाज की दयनीय आर्थिक स्थिति, जीने के साधन, उनके द्वारा चलायी जल, जमीन, जंगल की लड़ाई के महत्वपूर्ण पक्षों का विस्तार से विश्लेषण किया जाएगा।

'समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविता का शिल्पविधान' शीर्षक से अभिहित चतुर्थ अध्याय में कविता के शैल्पिक पक्ष की सैद्धांतिक पृष्टभूमि को विश्लेषित करते हुएं हिंदी आदिवासी कवियों द्वारा प्रयुक्त शिल्पविधान को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा। जिसके अंतर्गत भाषिक तत्त्व, शैली तत्त्व, बिंब , प्रतिक, फँटसी, मिथक, लय आदि बातों को समाहार किया जाएगा।

पंचम अध्याय **'उपसंहार'** नाम से युक्त है। इस अध्याय के अंतर्गत शोधविषय के सार को रेखांकित करते हुए साथ ही शोध विषय की उपलब्धिगत विशेषताओं को स्पष्ट किया जाएगा। साथ ही आदिवासी साहित्य को लेकर शोध की नई दिशाओं की ओर भी संकेत किया जाएगा।

शोध प्रबंध के अंत 'परिशिष्ट' में संदर्भ ग्रंथ सूची के अंतर्गत आधार ग्रंथ सूची, सहाय्यक ग्रंथ सूची, कोश ग्रंथ सूची एवं पत्र – पत्रिकाओं की सूची दी जाएगी।

उपसंहार :

' समकालीन हिंदी आदिवासी कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त **आदिवासी विमर्श'** इस विषय के अंतर्गत पांच अध्याय किये जाएंगे 'आदिवासी कविता : उद्भव, विकास एवं आदिवासी विमर्श का सैद्धांतिक पक्ष' को देखा जाएगा। चयनित आदिवासी कवियों का व्यक्तित्व और रचनागत परिचय कराया जाएगा तथा आदिवासी लोकसंस्कृति, परंपरा, त्यौहार, लोकनृत्य, रहन-सहन, जीवन पद्धति, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक दृष्टिकोण तथा समस्याओं पर विचार विमर्श किया जाएगा। शोधप्रबंध के अंतर्गत भाषिक तत्त्व, शैली तत्त्व, बिंब , प्रतिक, फँटसी, मिथक, लय आदि बातों को विश्लेषित किया जाएगा। शोधप्रबंध के अंत में उपसंहार के अंतर्गत सभी अध्यायों का सार दिया जाएगा।

आधारग्रंथ :

1. आदिवासी मोर्चा- डॉ. भगवान गव्हाडे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली. 2015
2. नगाड़े की तरह बजते शब्द- निर्मला पुतूल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली. 2005
3. जंगल पहाड़ के पाठ- महादेव टोप्पो, अनुज्ञा बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. कोन जोगा- वंदना टेटे, प्यारा केरकट्टा फाऊंडेशन, 2015.
5. लोकप्रिय आदिवासी कविताएं- वंदना टेटे, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली. 2017.

संदर्भग्रंथ :

1. कविता की जमीन जमीन की कविता- नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. कविता के नए प्रतिमान- नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी- सं. रमणिका गुप्ता, रामकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. आदिवासी साहित्य यात्रा- रमणिका गुप्ता, रामकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

शोधार्थी	**शोधनिर्देशक**
श्री. हिरामण देवराम टोंगारे	**डॉ. अनिलकुमार आर. राठोड**